एक लेटतियां जाए सूल उभराए, उठावें कर पकर।
आई तिन हांसी मावे न स्वांसी, गिरी पकरे कर।। ८ ।।

एक हंसी के कारण पेट दर्द से लेटती है और दूसरी हंसते-हंसते उसका हाथ पकड़ कर उठाती है तो उसकी हंसी इतनी बढ़ जाती है कि इसको मारे हंसी के सांस काबू में नहीं आता। वह भी हाथ पकड़े-पकड़े गिर पड़ती है और हंसती है।

देखो इनको सूल मुख सनकूल, दरद न माए अन्दर।
सखियां बेसुमार हुओ अंबार, ए देखो नीके नजर।। ९ ।।

इनके हंसते हुए मुख को तथा पेट के दर्द को जो हंसी से समाता नहीं, देखो। यहां पर सखियां बेहिसाब इकट्ठी होकर आनन्द लेती हैं। यह अपनी आत्मा की दृष्टि से देखो।

स्याम स्यामाजी आए देख्यो खेल बनाए, सब उठियां हंसकर।
खेलें महामति देखलावें इन्द्रावती, खोले पट अन्तर।। १० ।।

श्री राजजी और श्री श्यामाजी उस समय आ गए। उन्होंने भी अच्छी तरह से इस खेल को देखा तो सब सखियां हंसते-हंसते उठीं। श्री इन्द्रावतीजी अपने तन से खेलकर दिखा रही हैं। श्री राजजी महाराज की पांच शक्तियों के स्वरूप महामतिजी इस संसार में इन्द्रावती के तन में बैठकर खेल का आनन्द ले रही हैं और जागृत बुद्धि की तारतम वाणी से सबके परदे खोल रही हैं।

।। प्रकरण ।। ४० ।। चौपाई ।। २३५६ ।।

रामत दूसरी

एक अंग अभिलाखी देवें साखी, कहे वचन विसाल।
एक कर कंठ बांहें मिल लपटाए, खेलतियां करें ख्याल।। १ ।।

कोई सखी मन में उमंग भरकर आती है और बाकी सखियों को खेल के सुन्दर वचनों से अच्छी तरह निर्देश देती है (समझाती हैं)। कोई सखी एक-दूसरे के गले में हाथ डालकर खेल खेलती है।

एक आवें लटकतियां बोलें मीठी बतियां, चलें चमकती चाल।
एक आवें मलपतियां रंग रस रतियां, रहें आठों जाम खुसाल।। २ ।।

कोई सखी लटकती-मटकती चाल से मीठी बातें बोलती हुई आती है। कोई सखी मस्ती के रंग में डूबी हुई दिन-रात खुशी में मग्न रहती है।

एक आवें नाचतियां भमरी फिरतियां, दे भूखन पांउ पड़ताल।
एक गावती आवें तान मिलावें, कोई स्वर पूरें तिन नाल।। ३ ।।

एक सखी नाचती हुई, भंवरी फिरती हुई और पांव पटकती आती है जिससे उसके आभूषण बजते हैं। एक सखी गाती हुई, एक तान मिलाती हुई और एक उन्हीं के साथ स्वर पूरती हुई आती है।

एक माहें धाम निरखें चित्राम, देखतियां थंभ दिवाल।
एक निरखें नंग नूर भूखन जहूर, माहें देखें अपने मिसाल।। ४ ।।

एक सखी रंग महल के अन्दर, थंभ, दीवार और चित्रों को देखती है। एक सखी अपने आभूषणों के तेज को देखती है और उनमें अपनी शोभा देखती है।

Nijanand App

एक मिल कर दौड़ें बांध के होड़ें, लंबी जहां पड़साल।
एक पिउ को देखें सुख विसेखे, कहें आनन्द कमाल।।५ ।।

कई सखियां एक साथ मिलकर होड़ बांधकर लम्बी पड़साल में दौड़ती हैं। कोई सखियां धनी को देखकर ही सुखी होती हैं और कहती हैं यही सबसे बड़ा आनन्द है।

एक बैन रसालें गावें गुन लालें, सोभित मद मछराल।
एक बाजे बजावें मिलकर गावें, सुन्दर कंठ रसाल।।६ ।।

एक सखी मस्ती में भरी हुई मीठी रस भरी वाणी से श्री राजजी महाराज के गुण गाती है। एक सखी बाजे बजाती है। कई सखियां अपने सुन्दर गले से मिलकर गीत गाती हैं।

एक पूरे स्वर सारे हुंनर, छेक बालें तिन ताल।
एक पिउसों हंस हंस बातें करे रंग रस, करें होए निहाल।।७ ।।

एक सखी अपनी कला के साथ स्वर पूरती है। दूसरी हाथ की कला दिखाकर स्वर तोड़कर स्वर पूरती है। एक धनी से हंस-हंसकर बातें करके आनन्द लेती है और तृप्त हो जाती है।

एक देखें धनी रूप अदभुत सरूप, कहा कहूं नूर जमाल।
एक पिउ सों बातें करें अख्यातें, रंग रस भरियां रसाल।।८ ।।

एक धनी के अदभुत मनमोहक स्वरूप को देखती है जिनके स्वरूप का वर्णन कैसे करें? एक धनी से गुझ बातें करती है और एक आनन्द मयी रसीली बातें करती है।

एक रस रीत उपजावें प्रीत, देखावें अपनों हाल।
एक अंग अलबेली आवे अकेली, हाथ में फूल गुलाल।।९ ।।

एक बड़े प्यार से बड़ा रस पैदा करती है और अपनी हकीकत बताती है एक अलबेली है जो अकेली ही हाथ में लाल रंग के फूल लेकर पिया के पास आती है।

एक अटपटी हालें तिरछी चालें, हाथ में छड़ियां लाल।
एक नेत्र अनियाले प्रेम रसालें, रंग लिए नूरजमाल।।१० ।।

एक अटपटी हालत में तिरछी चाल से आती है। एक हाथ में लाल छड़ी घुमाती आती है। एक अपने तिरछे नयनों से प्रेम रस में डूबी हुई श्री राजजी महाराज से सुख लेती है।

कहे महामती इन रंग रती, उठी सो हंस दे ताल।।११ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि इस तरह से आनन्द में डूबी सखियां हंसती हुई ताली देकर उठती हैं।

।। प्रकरण ।। ४१ ।। चौपाई ।। २३६७ ।।

बड़ी रामत

कहियत नेहेचल नाम, सदा सुखदाई धाम।
साथजी स्यामाजी स्याम, विलसत आठों जाम री।।१ ।।

अपना घर अखण्ड परमधाम है जो सदा सुख देने वाला है। यहां श्री राजश्यामाजी और रूहें रात-दिन आनन्द की लीला करते हैं।

Nijanand App